सन्त चरणरज

तुकाराम महाराज द्वारा लिखित एक अभंग

गायन : विजु कुलकर्णी

ध्रुवपद

संत चरणरज लागता सहज
वासनेचे बीज जळोनी जाय ॥

सन्तजनों में इतनी सामर्थ्य होती है कि
यदि तुम उनके चरणों की धूलि तक का स्पर्श कर लो
तो तुम्हारी समस्त वासनाओं [कामनाओं] के बीज भस्म हो जाएँगे।

पद १

मग रामनामि उपजे आवडी
सुख घडोघडी वाढो लागे ॥

तब, तुम्हारे अन्दर रामनाम के प्रति प्रेम
अपने आप उपजेगा।
और उसके बाद,
तुम्हारा आनन्द क्षण-क्षण बढ़ता जाएगा।

पद २

कंठी प्रेम दाटे नयनी नीर लोटे
हृदयी प्रगटे रामरूप ॥

तुम्हारा कण्ठ प्रेम से रुँध जाएगा,
नयनों से प्रेमरूपी जलधाराएँ बहने लगेंगी
और तुम्हारे हृदय में राम का रूप प्रकट हो जाएगा।

पद ३

तुका म्हणे साधन सुलभ गोमटे
परि उपतिष्ठे पूर्वपुण्ये ॥

तुकाराम कहते हैं,
"यद्यपि यह बहुत सुलभ प्रतीत होता है,
पर सन्तों का सान्निध्य दुर्लभ है।
किसी सन्त का सान्निध्य पाने के लिए बहुत पुण्य चाहिए।"

इस अभंग की रिकॉर्डिंग सिद्धयोग बुकस्टोर में उपलब्ध है।

परिचय : कुन्ती फ़ॅन्हुल

तुकाराम महाराज एक सृजनशील सन्त-कवि थे जो सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में, भारत के महाराष्ट्र राज्य के देहू नामक गाँव में निवास करते थे। उन्होंने हज़ारों अभंगों की रचना की जो भगवान के प्रति उनके प्रेम व ललक के भावों से ओतप्रोत थे।

मराठी भाषा में अभंग का अर्थ है, 'अखण्डित, अटूट, वह जो भंग नहीं होता'—बिलकुल उसी अविकारी प्रेम की भाँति जिसका वर्णन तुकाराम महाराज ने किया है और जिसकी अनुभूति अपने हृदय में करने के लिए वे हमें भी आमन्त्रित करते हैं। इन अभंगों में वह शक्ति है जो हममें भक्ति व दिव्य प्रेम जाग्रत कर दे और हमें अपने अन्तर में विद्यमान भगवान के सान्निध्य में प्रतिष्ठित होने की प्रेरणा दे।

सिद्धयोग के गुरुजन, सन्त-कवियों के प्रचीन प्रज्ञान और उनके भक्तिमय प्रेम की अभिव्यक्तियों का सम्मान करते हैं। वे विद्यार्थियों को प्रेरणा देते हैं कि विद्यार्थी इन अभंगों को गाएँ और सन्तजनों की सिखावनियों का अध्ययन करें जिससे वे स्वयं अपने अन्दर भक्ति व ईश्वराराधना के भाव का विकास कर सकें। इस पृष्ठ पर दिए गए अभंग, 'सन्त चरणरज' में तुकाराम महाराज सन्तों की शक्ति का गुणगान करते हैं और यह समझाते हैं कि कैसे उनके सान्निध्य में आने से हमारे अन्दर भगवत्प्रेम जाग्रत होता है।

तुकाराम महाराज ने अपने जीवन के आरम्भिक काल में इतना भीषण दुःख व विपत्तियाँ सही थीं कि वे स्वयं प्रबुद्धजनों की संगति के लिए तरसते थे ताकि वे सांसारिक क्लेशों के सागर को पार कर सकें जिसमें वे भटक गए थे। तुकाराम महाराज के कोई सदेह गुरु नहीं थे जो उन्हें जाग्रत करें, उनका मार्गदर्शन करें, अतः उन्होंने ज्ञानेश्वर महाराज, एकनाथ महाराज व सन्त नामदेव जैसे अपनी परम्परा के सन्तजनों के भजनों व अभंगों की शरण ली जो कि उनसे सदियों पहले हो चुके थे। अन्ततः, तुकाराम महाराज की खोज सफल हुई और सिद्धलोक के एक सद्गुरु ने स्वप्न में उन्हें दिव्य दीक्षा प्रदान की। इस अभंग के अन्तिम पद में तुकाराम महाराज गुरु के महत्त्व के विषय में कहते हैं : "...सन्तों का सान्निध्य दुर्लभ है। किसी सन्त का सान्निध्य पाने के लिए बहुत पुण्य चाहिए।" अपनी श्रीगुरु की कृपा व उनके मार्गदर्शन में साधना करने के लिए, भगवान की खोज करने के लिए हम सिद्धयोगियों के पास कितना अनमोल अवसर है।

भारत के सन्त-कवियों के प्रति जो चीज़ मुझे आकर्षित करती है, वह यह है कि अपनी रचनाओं में वे अपनी आन्तरिक यात्रा के वृत्तान्तों का वर्णन, उद्बोधक व संगीतमय काव्यात्मक भाषा के माध्यम से करते हैं जिनसे हमें भी अपने साधना-पथ पर प्रेरणा मिलती है। अनेक सन्त-कवियों ने यह बात जान ली थी कि संगीत की शक्ति हृदय पर सीधा प्रभाव डालती है और इसका अनुभव मैंने व्यक्तिगत रूप से किया भी है। इसीलिए शीघ्र ईश्वरानुभूति करने हेतु, भक्ति-संगीत को सुनने व गाने को सबसे सुगम साधन माना जाता है। भक्ति-संगीत के स्पन्दन उस उत्कृष्ट प्रेम को प्रवाहित करते हैं जो अनवरत रूप से हमारे अन्तरतम में बह रहा है।

सिद्धयोग पथ पर सभी को पूरे हृदय से नामसंकीर्तन करने व गाने के लिए प्रेरित किया जाता है। ऐसा क्यों? क्योंकि जब हम भगवान की स्तुति में अपने स्वर को अर्पित करने का प्रयत्न करते हैं तो एक अद्भुत कीमियागरी घटित होती है। उन भजनों व अभंगों में निहित ज्ञान, हमारे अज्ञान को बहा देता है और हमारी अपनी ही अन्तर्जात महानता को प्रकट कर देता है।

विजु कुलकर्णी, जिन्हें सभी प्रेम से विजु ताई कहते हैं, भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रशिक्षित एक निष्णात सिद्धयोग संगीतज्ञ हैं। अपने संगीत-गायन द्वारा वे दशकों से गुरुमाई चिद्विलासानन्द व बाबा मुक्तानन्द की सेवा करती रही हैं। इस रिकॉर्डिंग में विजु ताई ने तुकाराम महाराज के अभंग 'सन्त चरणरज' को मधुर स्वरों में गाया है। यह मधुर रचना यमन राग में संगीतबद्ध है जो कि आनन्द, भक्ति व शान्ति के रस उत्पन्न करता है।

जब आप इस अभंग के शब्दों व इसके अनुवाद को पढ़ें तो उन्हें ज़ोर-से पढ़ने का प्रयत्न करें और देखें कि आपको क्या अनुभव होता है। अभंग के साथ-साथ गुनगुनाएँ और आपके मन को जैसा महसूस हो, उस पर विचार करें। अभंग के साथ गाते हुए देखें कि इसका आपकी अन्तर-स्थिति पर

क्या प्रभाव पड़ता है। भजनों व अभंगों को श्रद्धा-भक्ति के साथ गाकर हम भगवान व श्रीगुरु के प्रति सम्मान अर्पित करते हैं, उस आशीर्वादमय जीवन के लिए जो हमें मिला है। जैसा कि तुकाराम महाराज इस अभंग में कहते हैं, "सन्तजनों में इतनी सामर्थ्य होती है कि यदि तुम उनके चरणों की धूलि तक का स्पर्श कर लो तो तुम्हारी समस्त वासनाओं [कामनाओं] के बीज भस्म हो जाएँगे।"

सन्तजनों की संगति का अनुभव करने के लिए हम तुकाराम महाराज के उदाहरण का अनुसरण कर सकते हैं और, गा सकते हैं! एक सिद्धयोग संगीतज्ञ के रूप में लगभग तीन दशकों की अपनी सेवा में मैंने सीखा है कि अपने गाने के विषय में मेरा जो भी विचार हो कि मैं अच्छा गाती हूँ या नहीं, पर जिस चीज़ का वास्तव में महत्त्व है, वह यह कि मैं अपनी सेवा कितनी निष्ठा से अर्पित कर रही हूँ। जब मैं शुद्ध हृदय से गाती हूँ तो भगवान सुनते हैं। और जब मैं भगवान को थोड़ा-सा भी प्रेम अर्पित करती हूँ तो वे मुझे हज़ार गुना प्रेम वापस देते हैं।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।